DSSSB PRT, TGT & PGT

Part(A+B)

SCHOLAR BATCH

हिन्दी

अलंकार

LIVE 03-05-2024 09:00 AM

अलंकार

शब्दालंकार

[शब्द और अक्षर के कारण शोभा बढ़े]

- अनुप्रास
- यमक
- श्लेष
- वीप्सा
- वक्रोक्ति

अर्थालंकार

[अर्थ के कारण शोभा बढ़े।]

- उपमा
- रूपक
- उत्प्रेक्षा
- अतिशयोक्ति
- भ्रांतिमान
- अन्योक्ति
- विभावना
- सन्देह
- विरोधाभास

उभयालंकार

[दोनों के कारण शोभा बढ़े]

परिभाषा ⇒ अलंकार दो शब्दों अलम् + कार के योग से मिलकर बना है।

अलम् ↓ उपसर्ग [सजावट/आभूषण]

कार ↳ करना

* आचार्य दण्डी के अनुसार "काव्य शोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते"।

↳ अर्थ - काव्य के शोभाकारक धर्म अलंकार कहलाते है।

* "काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्वों को अलंकार कहते है।"

⇒ स्त्रियाँ अपने साज श्रृंगार के लिए जिन आभूषणों का प्रयोग करती है अलख्य आभूषण अलंकार कहलाते है।

अलंकार के तीन प्रकार / भेद होते हैं।

(i) - शब्दालंकार ⇒ जहाँ पर साहित्य में कविता के माध्यम से वर्ण तथा शब्दों का संग्रह चमत्कार उत्पन्न करता है। उसे शब्दालंकार कहते हैं।

(i)- अनुप्रास अलंकार ⇒ जिस रचना में एक वर्ण की बार-बार आवृत्ति के कारण चमत्कार उत्पन्न हो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है इसके पाँच भेद होते हैं-

(i) - छेकानुप्रास अलंकार = जहाँ अलग-अलग वर्णों की समान क्रम में आवृत्ति हो।

रीझि-रीझि रहसि रहसि हँसि हँसि उठै साँसैं भरि आंसू भरि कहत दई दई।

(ii) अंत्यानुप्रास अलंकार ⇒ जहाँ वाक्य या पंक्ति के अन्त में तुकान्त शब्द आये।

उदा० मेरे मन के मीत मनोहर
तुम हो तरुवर मेरे सहचर
— तुकान्त

कहाँ था तू संशय के नाग
लगा दी किसने आकर यह आग
— तुकान्त

(iii)- वृत्यानुप्रास अलंकार = जहाँ वर्णों द्वारा वृत्त या अर्द्धवृत्त बने।

चारु चन्द्र की चंचुल किरणें
चरर मरर खुल गये अरर

(iv)- लाटानुप्रास ⇒ जहाँ वाक्य की या शब्द की पुनरावृत्ति समान अर्थ में हो।

वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे ।

(मानव ✓) (मानव ✓)

पुत्र — पूत कपूत तो का धन संचय ।

पुत्र — पूत सपूत तो का धन संचय ।

(v)- श्रुत्यानुप्रास ⇒ वर्णों की इस तरह आवृत्ति हो जो कानों को प्रिय लगे ॥

खिड़कियों के खड़कने से खड़कता है खड़क सिंह

अनुप्रास अलंकार उदाहरण :

* तरणि-तनुजा तट तमाल (त) वर्ण
* रघुपति राघव राजा राम (र) वर्ण
* चारु चन्द्र की चंचल किरणें (च) वर्ण
* मुख मंयक सम मंजु मनोहर (म) वर्ण
* राम रमापति कर धेनु लेहु। (र) वर्ण
* मुदित मनोहर मानस देखा। (म)
* कुल कानन कुंडल मोर पखा।
* बिबिध सरोज सरोवर फूले।

② - यमक अलंकार ⇒ जब एक ही शब्द दो या दो से अधिक बार आये और उसका अर्थ हर बार अलग हो वहाँ यमक अलंकार होता है।

युग्म / जोड़ा

उदा॰ कनक - कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।

कनक → धतूरा
कनक → सोना

काली घटा का घमण्ड घटा

काली घटा → काले बादल
घमण्ड घटा → कम होना

सजना है मुझे सजना के लिए

सजना → शृंगार
सजना → स्वामी

* जे तीन बेर खाती थी ते तीन बेर खाती थी।

तीन बेर के दाने

तीन बार

* जैते तुम तारे तैते नभ में न तारे हैं

प्यारा

तारागण